विचार बिन्दु

न्याय युक्त व्यवहार करना, सौंदर्य से प्रेम करना तथा सत्य की भावना को हृदय में धारण करके विनयशील बने रहना ही सबसे बड़ा धर्म है।

–डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

हमारी असामाजिकता का भविष्य क्या है?

स्वभावत: 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज के बगैर एकान्त में नहीं रह सकता' यूनानी दार्शनिक अरस्तू का यह कथन आज भी सर्वमान्य है किन्तु शीर्षक इस कथन के विपरीत हमें यह सोचने को मजबूर कर देता है क्या समाज में असामाजिकता वर्तमान में पांव पसार चुकी है और फैलती जा रही है। प्रश्न यह भी है कि यदि असामाजिकता है तो समाज का भविष्य क्या होगा?

असामाजिकता के प्रश्न पर विचार करने से पूर्व फ्रांसीसी दार्शनिक रूसो का यह कथन याद करना समीचीन है कि 'मनुष्य सामाजिक प्राणी है किन्तु सभी जगह नियमों के बंधन से बंधा है' और नियमों की, स्वतंत्रता हेतु, पालना करना आवश्यक है। यह सामाजिक व्यवस्था की अनिवार्यता भी है। इस कसौटी पर देखा जाये तो सबसे पहले, कानून एवं व्यवस्था की स्थिति कमोबेश बद से बदतर होती जा रही है। पुलिस अधिकारियों पर राजनैतिक दबाव एवं नियन्त्रण के कारण दुरुपयोग के अधिकाधिक मामले सामने आ रहे हैं। हाल ही में जुबेर खां पत्रकार के खिलाफ आई.पी.सी. के अन्तर्गत राष्ट्रद्रोह एवं साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने के मामले उत्तर प्रदेश पुलिस ने दर्ज किये। मामला सुप्रीम कोर्ट पहुँचने पर शीर्ष न्यायालय ने पुलिस के लिए सख्त टिप्पणी दर्ज करते हुये जुबैर खां के विरुद्ध दर्ज सभी मामलों में राहत देते हुये जमानत पर रिहा करने के आदेश दिये हैं। ऐसे अन्य प्रकरणों में भी निर्देश दिये गये। उत्तर प्रदेश सरकार की खान को आगे टिवट्र पर टिप्पणी से रोकने से सर्वोच्च न्यायालय ने मना कर दिया क्योंकि एक पत्रकार को उसे व्यवसाय कर्तव्य से वंचित नहीं किया जा सकता। कानून के उल्लंघन पर वह स्वत: दण्ड का भागी होगा।

कानून एवं नियमों की पालना न करने या जानबूझ कर उल्लंघन करने के अनेक मामले अखबारों एवं मीडिया चैनलों की सुर्खियों में रहते हैं जिनमें हाइवे टोल पर राजनेताओं द्वारा दबंगई एवं उनके सम्बन्धियों द्वारा ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन के मामले भी शामिल हैं। राजनेताओं के गैर जिम्मेदार आचरण का प्रभाव आम जनता पर पड़ा है। ट्रैफिक नियमो को तोड़ने पर जुर्माने से बचने और छोटी-मोटी रिश्वत से काम चलाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। पुलिस द्वारा भीड़ को तितर-बितर करने के लिए मनमानी लाठी चार्ज, आँसू गैस छोड़ने के विरुद्ध उकसाई भीड़ में लोग विरोध करते हुये थाना जलाने और पुलिसकर्मियों पर आक्रमण करने का साहस जुटाते हैं।

हाल में अरावली पहाड़ियों के तले हरियाणा खनन क्षेत्रों में खनन माफियों द्वारा पुलिस अफसर पर जानलेवा ट्रक चढ़ाने की वारदात हुई। सुप्रीम कोर्ट द्वारा अरावली के खनन क्षेत्रों में अनेक शर्तो के साथ खनन कार्य वर्षोपरान्त पुन: आरम्भ करने के आदेश 3-4 वर्ष पूर्व दिये गये थे उसी छूट की आड़ में खनन माफिया हरियाणा-राजस्थान, बिहार सहित अनेक राज्यों में सक्रिय होकर राजनैतिक संरक्षण पाकर मनमाने खनन का कार्य कर रहे हैं। सरकारी तंत्र एवं राजनेता अप्रत्यक्ष रूप से असामाजिक कार्यों को बढ़ावा दे रहे हैं जो अनैतिक एवं गैर कानूनी हैं।

उपरोक्त उदाहरण कानून एवं व्यवस्था से सम्बन्धित हैं किन्तु राजकीय-सामाजिक दायित्वों एवं कर्त्तव्यों में अनगिनत उदाहरण प्रस्तुत हो रहे हैं जिनमें अवहेलना की संख्या एवं औचित्य-अनौचित्य का ऑकलन एक आलेख में सम्भव नहीं है। समाज में फैले या फैलाये गये उन्माद उपद्रवों के पीछे राजनैतिक हित अथवा चुनाव की राजनीति का परिणाम है। यह इससे स्पष्ट होगा कि संसद एवं विधानसभा सदस्यों में 70 प्रतिशत के विरुद्ध आपराधिक मामले दर्ज हैं जिनमें 20 से 30 प्रतिशत केसेज गम्भीर प्रकृति के है और उनमें बलात्कार, दंगा, हत्या एवं हत्या के प्रयास के प्रकरण भी शामिल है।

सुनियोजित तरीके से सोशल मीडिया के प्लेटफार्म विशेषतया टिवट्र एवं वाट्सअप पर राजनैतिक विरोध एवं धार्मिक उन्माद फैलाने के निरन्तर प्रयास किये जाते हैं। आतंकी संगठनों के समूह सक्रियता से अपने घडयंत्र को कामयाब बनाने का प्रयास करते पाये गये। अनेक आतंकी मामलों का पुलिस ने पर्दाफाश करने में सफलता पाई है किन्तु साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने के मामलों में पुलिस दबाव में सक्रिय या निष्क्रिय होकर कार्य करती है यह अधिकांशतया शासक दल के इशारे या दबाव पर काम को अन्जाम दे पाती है। अनेक केसेज में पासा पलट जाता है और दंगा रोकने में सफलता नहीं मिलती।

सोशल मीडिया विशेषतया वॉट्सऐप पर मैसेज का आदान-प्रदान समूहों को विभाजित कर देता है। सामाजिकता में असामाजिकता का जहर धीरे-धीरे घुलता रहता है। यहां तक कि हम पड़ोसी से भी दूरी बनाने की कोशिश करते हैं। दोस्ती अजनबीपन में बदल जाती है, दोषारोपण का दौर शुरू हो जाता है। हम समूह छोड़ देते हैं या पुनः आग्रह पाकर फिर शामिल हो जाते हैं।

इस संदर्भ में 21 जुलाई को राज्यसभा में बिहार के प्रतिनिधि सांसद प्रो.मनोज कुमार झा ने वेपन्स ऑफ मॉस डेस्ट्रक्शन बिल 2022 पर बहस में भाग लेकर उसका समर्थन करते हुये रोचक तरीके से एक अन्य तथ्य को उजागर किया। उन्होंने कहा कि समाज और देश में वेपन ऑफ मॉस डिस्ट्रैक्शन एवं मॉस डिस्रपशन रोकने के लिए बिल भी संसद में लाना चाहिये। उनका आशय था कि विभिन्न राजनैतिक दलों द्वारा देश का ध्यान भटकाने (डिस्ट्रैक्शन) के लिए मीडिया चैनलों एवं सोशल मीडिया पर भ्रामक तरीके से गोहत्या, लव जिहाद और मस्जिद बचाओ जैसे उन्मादक विषय के समाचारों एवं दर्दनाक घटनाओं को बहाना बनाकर उछाले जाते हैं। आम जनता को सोशल मीडिया एवं चैनलों पर बहस असह्य हो जाता है और राष्ट्रीय जन-जीवन असहज हो जाता है।

सोशल मीडिया विशेषतया वाट्सअप पर मैसेज का आदान-प्रदान समूहों को विभाजित कर देता है। सामाजिक प्रश्न हमें एक-दूसरे से दूर करते हैं, हमारे विचारों को दूषित या कलुषित करने का प्रयास करते हैं। थक-हार कर हम विभाजकीय विचारधारा में शामिल हो जाते हैं या किनारा करने को मजबूर हो जाते हैं। सामाजिकता में असामाजिकता का जहर धीरे-धीरे घुलता रहता है। यहां तक कि हम पड़ोसी से भी दूरी बनाने की कोशिश करते हैं। दोस्ती अजनबीपन में बदल जाती है, दोषारोपण का दौर शुरू हो जाता है। हम समूह छोड़ देते हैं या पुन: आग्रह पाकर फिर शामिल हो जाते हैं।

मीडिया चैनल्स पर अराजकतायुक्त बहस में मारामारी जैसा महसूस होने लगता है जब एक-दूसरे की आवाज को बीच में रोकने का प्रयास अनेकों बार किया जाता है इसमें लगभग सभी दलों एवं विचारधाराओं के आमन्त्रित वक्ता शामिल हो जाते हैं या मजबूर हो जाते हैं। इस विषय पर 29 दिसम्बर 2020 को राष्ट्रदूत में प्रकाशित आलेख 'मल्टी मीडिया मारामारी सोशल मीडिया मारामारी' में मैंने दोनों मीडिया पर अपने विस्तृत विचार व्यक्त किये थे।

संक्षेप में सोशल मीडिया की महामारी इस प्रकार फैल गई है कि बच्चों के मोबाइल पर गेम्स खेलने और किशोर वय के बच्चे ज्ञानवर्द्धन के साथ अश्लील तस्वीरें, फिल्म देखते पकड़े जाते हैं। दिसम्बर 2020 में छपी एक रिपोर्ट में, भास्कर दैनिक अखबार के अनुसार दुनिया में 3.6 अरब लोग सोशल मीडिया को रोज़ 144 मिनट दे रहे हैं। देश में 50 करोड़ से अधिक स्मार्ट फोन यूजर्स हो गये हैं। उनमें बुद्धिजीवियों एवं राजनीतिज्ञों सहित यूजर्स को सोशल मीडिया का वायरस या नशा महामारी सा प्रतीत होता है।

परिणामत: समाज में हत्या के बदले हत्या आत्महत्या की धमकी, छोटी-छोटी बातों जैसे पार्किंग स्थान या बच्चों के मध्य झगड़े से विवाद बन कर पड़ोसी या पड़ोसियों से अनबन पैदा हो जाती है। असामाजिकता हमें अराजकता की ओर घसीट रही है। विभिन्न शासक दलों के राज्यों में मीडिया और सोशल मीडिया पर उपजे और फैलते 'हेट स्पीच' घृणा फैलाने एवं साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने के बढ़ते मामलों के संदर्भ में हाल में माननीय सर्वोच्च न्यायालय में एक पिटीशन प्रस्तुत की गई है क्योंकि पिटीशनर्स के अनुसार असहमति और 'घृणा भाषण' (हेट स्पीच) के बीच अन्तर धूमिल करने को प्रयास सुनियोजित एवं जानबूझ कर किया जा रहा है। 22 जुलाई के दी हिन्दू दैनिक के मुखपृष्ठ समाचार के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र एवं राज्य सरकारों से 'हेट स्पीच' के विरुद्ध उनके द्वारा उठाये गये कदमों पर स्पष्टीकरण मांगा है। दूसरी ओर प्रार्थीगण को निर्देश दिये गये हैं कि एक सप्ताह के अन्दर चार्ट प्रस्तुत करें जिनमें हेट स्पीच के राज्यवार उद्धरण हों और जिसे वे सम्बन्धित राज्यों को भेजेंगे ताकि उनके द्वारा कथित स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया जा सके। शीर्ष न्यायालय को आखिरकार हस्तक्षेप करना पड़ा जो उचित ही है।

अन्तत: आलेख के शीर्षक में निहित प्रश्न का उत्तर क्या है? क्या हम इन्टरनेट के भूमण्डलीकरण के परिणामत: एक सोशल मीडिया की यथार्थ परक और यथार्थ से परे, सत्य मिश्रित झूठ वैकल्पिक सच, अतिरेक सत्य और अनकही गढ़ी-रचित दुनिया में अपने आपको खोते जा रहे हैं? इसका उत्तर कठिन है और इसका उत्तर हमें अपने अन्दर झांक कर पाना होगा। निजी जीवन में अन्त:-पीढ़ी के सोचने की प्रकृति और दृष्टिकोण को समझना होगा। विश्वव्यापी सोशल मीडिया की समस्या का पारिवारिक एवं निजी स्तर पर समाधान निकालना होगा। प्रथमतया अन्त: पीढ़ी यथा परिवार के सदस्यों में संवाद एवं समरसता का संचार करना होगा। अगली पीढ़ी को समझना होगा कि वृद्धजनों की बढ़ती जनसंख्या जो 5-10 वर्ष उम्र के बच्चों की संख्या से अधिक आंकी जा रही है विश्व का बढ़ता सबसे अमूल्य संसाधन है जिसका कमतर उपयोग हो रहा है। दोनो एवं सभी पीढ़ी के लोगों को मिल-जुलकर वैश्विक प्रगति हेतु कार्य करना होगा। इसी प्रकार आदिवासी समुदायों के मूल प्राकृतिक बुद्धिमता का समुचित उपयोग होना चाहिये क्योंकि प्रकृति के साथ उनका स्वाभाविक सम्बन्ध है। शीर्ष स्तर तक उनकी बुद्धिमता की परख होनी चाहिये।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग वैज्ञानिक पद्धति से संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के 17 लक्ष्यों की 2030 तक प्राप्ति हेतु स्थानीय समाधानों द्वारा वैश्विक समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करना होगा। राजनैतिक मतभेद से ऊपर उठकर राष्ट्रीय सहमति बनाने के लिए सार्थक प्रयास करने होंगे। क्या शासक दल और सरकारें ऐसा करेंगी? सुधी पाठक स्वयं उत्तर ढूंढें।

–अतिथि सम्पादक,
आई.सी.श्रीवास्तव,
आई.ए.एस. (से.नि.)
(पूर्व अध्यक्ष, ट्रांसपेरेन्सी, इण्टरनेशनल इन्डिया)

जीवन की हार है संग्रहण का मनोविकार!

डॉ रामावतार शर्मा

एक युवक वैवाहिक जीवन के बाद अवसाद में आ गया। जब अपने समाज के बड़े बुजुर्गों के पास राय लेने पहुंचा तो हर व्यक्ति एक ही तरह की बात करता था कि बस मस्त रहो, ध्यान लगाओ, योग से जुड़ो, भगवान को याद करो, प्रभु सब ठीक कर देगा। जब दोस्तों के पास गया तो उन्होंने उसे शराब के दो चार पेग पिलाए, कुछ सिगरेटें फूंकी और राय दी कि मस्त रहो, सब ठीक हो जायेगा। पर सब कुछ ठीक कैसे हो जायेगा?

किसी ने भी दोस्त के रूप में यह नहीं कहा कि तुम्हारी पीड़ा बड़ी है, हमें बताओ कि एक दोस्त के नाते हम इसे कैसे और कितना कम कर सकते हैं? जीवन की विकट समस्याएं न भगवान से सुलझती हैं और ना ही शराब से। जीवन की समस्याएं सुलझती हैं तर्क, संवेदना और निर्णय लेने की क्षमता से। जो यकायक भावनात्मक रूप से अकेले पड़ गए हैं उनके साथ खड़े होना ही साथ देना होता है। पर क्या हम ऐसा करते हैं?

मनुष्य के भटकने का एक मात्र कारण मनुष्य का अहंकार और समाज नाम के निर्दयी तंत्र का होना है। तथाकथित समाज रोड़े अटकाने में तो माहिर है पर उससे समस्याओं के समाधान की अपेक्षा करना पूर्ण नादानी होगी। भटका हुआ समाज भला किसी को क्या रास्ता दिखायेगा? अपनी मंजिल की राह हर किसी को खुद ही ढूंढनी पड़ती है।

कितने लोग होंगे समाज में जो किसी व्यक्ति की समस्याओं पर गहन विचार करके समाधान निकाल सकते हैं! शायद बहुत ही कम। हर तरफ पूर्वाग्रहों से भरे लोग बैठे हैं जो त्वरित निर्णय देने की आदत से ग्रस्त होते हैं। मेरे पास एक बार एक व्यक्ति अपने पुत्र को लेकर आए जिसने मेडिकल कॉलेज की प्रवेश परीक्षा तो बेहतरीन अंकों से पास कर ली क्योंकि उस पर माता -पिता का दबाव था पर अब वह मैडिकल की लंबी, बोरियत भरी पढ़ाई नहीं करना चाहता था।

उसका झुकाव फर्नीचर डिजाइनिंग की तरफ था, वह एक कारपेंटर बनना चाहता था जिसे सुन कर पिता गहरे अवसाद में थे। बाह्य रूप से देखा जाए तो लगता है कि पिता पुत्र के भले के लिए ही सोच रहा है, पर वास्तव में वे अपने ही बुने हुए मायाजाल में फंसे हुए हैं। उन्हें अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा की फिक्र पुत्र की रचनात्मक रुचि से कहीं ज्यादा बड़ी नजर आ रही है। पुत्र पारिवारिक दबाव के कारण मेडिकल में तो चला गया पर आज भी गहरे अवसाद में है जिसका वह इलाज ले रहा है। कितने ही रचनात्मक व्यक्तित्व श्रवण कुमार बना दिए जाते हैं, कितने ही पूरी उम्र भावनात्मक रूप से अकेले हो जाते हैं।

मेरी जान पहचान के एक व्यक्ति हैं। सरकारी अफसर हैं। कागज की तरफ कलम का मुख घुमाने तक के पैसे लेते थे। रिश्वत का पैसा पता नहीं कहां -कहां फैला रखा था। हर रोज अखबार में सबसे पहले मृत्यु समाचार पढ़ते हैं, जबरदस्त मृत्यु भय से ग्रसित हैं कि यदि मर गए तो इस धन का क्या होगा ? भयंकर मूंजी हैं, यहां तक कि बाजार से सब्जी भी रात को ही लाते हैं

■ संवाद विहीन हो चुका समाज एक मनोविकार में फंस गया है

ताकि सस्ती मिले। दो घंटे पूजा करते हैं और हर बात के बाद ईश्वर का नाम लेते हैं। कोई खाने पीने पर बुलाए तो भागे जाते हैं। खुद की दमड़ी आज तक जेब से नहीं निकाली। पैसा ऐसे लोगों के लिए धन नहीं है, एक मानसिक रोग है । ये लोग एक निर्मम मानसिकता के पोषक होते हैं।

ये लोग जिस परिवार के नाम पर रिश्वत लेते रहते हैं क्या ये उसे खुश रख पाते हैं? इनकी दुनियां में पैसे के अलावा और कोई विविधता नहीं है। बाहरी तौर पर सब कुछ ठीक लगता है पर इनके जीवन में एक बड़ा अकेलापन होता है। ऐतिहासिक तौर पर देखा जाए तो रिश्वतखोरों और भ्रष्टाचारियों ने कोई भी सकारात्मक सामाजिक या अन्य मानवीय कार्य नहीं किया और एक समय के उपरांत अपयश उनकी अंतरात्मा को और समय धन को नष्ट कर देता है।

उपरोक्त सभी उदाहरण बताते हैं कि जब भी कोई व्यक्ति वृहत समाज से अकेला पड़ जाता है। अब यदि वह बौद्धिक रूप से अपने आप को विकसित नहीं करता तो उसका मस्तिष्क ऐसी हरकतें करने लगता है कि वह एक दिन अपनी प्रतिष्ठा और लोगों का विश्वास खो देता है। वह बौद्धिक अकेलेपन का शिकार हो कर अपने मूल मानवीय गुण खो देता है। वरना मोटा वेतन, सुख सुविधा का जीवन, अच्छी पेंशन आदि के होते हुए ये मंत्री, विधायक, उच्च अधिकारी, धनी व्यापारी, उद्धमी और ठेकेदार आदि इस रिश्वत के दलदल में क्यों पड़े रहते हैं? स्वास्थ्य के रक्षक डॉक्टर्स की जीवनशैली कितनी चिकित्सा विज्ञान विरोधी होती है?

चारों तरफ की आपाधापी बताती है कि संवाद विहीन हो चुका समाज एक मनोविकार में फंस गया है जहां हर तौर तरीके से अर्जित धन के बिस्तर पर एक अकेला इंसान कब मध्य रात्रि में सांसों का प्रवाह खो चिर निंद्रा में खो जाता है इसका पता ही नहीं चलता। इकट्ठा करने की प्रतिद्वंदिता में जीवन को जीने का, उन्मुक्त हंसने का, बच्चे जैसे कौतुहल आदि का तो मौका ही नहीं मिला। तीन दिन की रस्म और सब कुछ समय की धूल के संग धूल।

डॉ रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक

सांवलिया सेठ के भंडार से 4.22 करोड़ नगद निकले

सांवलिया सेठ के भंडार गिनती में उपस्थित मंदिर बोर्ड अध्यक्ष भेरू लाल गुर्जर एवं पदाधिकारी।

मंडफिया, (निसं)। मेवाड़ अंचल के प्रमुख तीर्थ स्थल भगवान श्री सांवलिया जी सेठ मंडफिया के दरबार का भंडार बुधवार को मंदिर बोर्ड अध्यक्ष भेरू लाल गुर्जर एवं अतिरिक्त जिला कलेक्टर एवं मंदिर के मुख्य निष्पादन अधिकारी गीतेश श्री मालवीय की उपस्थिति में खोला गया। मंदिर बोर्ड अध्यक्ष भेरू लाल गुर्जर ने बताया कि बुधवार को खोले गए भंडार से 4 करोड़ 22 लाख 40 हजार रुपए नगद प्राप्त हुए।

अध्यक्ष गुर्जर ने बताया कि शेष राशि की गिनती होना बाकी है। मंदिर के केशियर नंदकिशोर टेलर ने बताया कि भंडार से निकले एवं मंदिर कार्यालय में जमा सोना चांदी का तोल होना अभी बाकी है। भंडार गिनती के समय मंदिर बोर्ड सदस्य भेरूलाल सोनी, श्री लाल पाटीदार, मंडफिया पूर्व सरपंच हजारी दास वैष्णव, मंदिर के प्रशासनिक, अधिकारी कैलाश चंद्र दाधीच, केशियर नंदकिशोर टेलर, कार्मिक प्रभारी लेहरी लाल गाडरी, कांठोस युवा नेता सुरेश चंद्र गुर्जर सहित मंदिर एवं बैंक कर्मचारी उपस्थित थे।

अनूपगढ़ के सरकारी अस्पताल की छत से गिरा प्लास्टर

अनूपगढ़, (निसं)। यहां के राजकीय चिकित्सालय में देर रात कमरा नंबर 9 की छत का मलबा गिर गया । रात के समय कमरे में कोई कर्मचारी नहीं होने से बड़ा हादसा टल गया। वहीं मलबा गिरने से फर्नीचर टूट गया।

चिकित्सा प्रभारी द्वारा विभाग को समस्या के संबंध में कई बार अवगत करा दिया गया, लेकिन विभाग को शायद किसी बड़े हादसे का इंतजार है। राजकीय चिकित्सालय के प्रभारी डॉ. मुरलीधर कुमावत ने बताया कि इस संबंध में उच्च अधिकारियों को कई बार अवगत कराया जा चुका है। स्वास्थ्य विभाग को पहला पत्र 2019 में लिखा गया था। मगर अभी तक स्वास्थ्य विभाग की ओर से कोई भी उचित कदम नहीं उठाया गया है। इससे पहले कमरा नं. 6 और 8 में भी छत से मलबा गिर चुका है। दीवारों की हालत ऐसी हो चुकी है कि कभी भी गिर सकती है। बात करने पर कलेक्टर रुक्मणि रियार ने कहा कि वे स्वास्थ्य विभाग के सीएमएचओ से संपर्क कर शीघ्र ही समस्या का समाधान करवाएंगे।

राज्यपाल कलराज मिश्र करेंगे राजूवास में संविधान पार्क का लोकार्पण

बीकानेर, (कासं)। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं राज्यपाल कलराज मिश्र शुक्रवार को प्रात: 11:30 बजे राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में नवनिर्मित संविधान पार्क एवं पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धतियां एवं वैकल्पिक औषधि विज्ञान केन्द्र का लोकार्पण करेंगे। कृषि एवं पशुपालन मंत्री लालचंद कटारिया की भी इस कार्यक्रम में उपस्थिति रहेंगे।

कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय के सार्दुल सदन परिसर में मुख्य द्वार के पास संविधान पार्क का निर्माण किया गया है। इस संविधान पार्क में संविधान स्तम्भ बनाया गया है जिस पर अशोक चिन्ह एवं तिरंगा लगा है। मार्बल के पत्थर पर राज्य के नीति निर्देशक तत्व, नागरिकों के मूल अधिकार एवं मूल कर्तव्य को अंकित किया गया है। भारतीय संविधान की उद्देशिका पट्टी को मुख्य स्तम्भ पर दर्शाया गया है। संविधान पार्क के लोकार्पण के बाद राज्यपाल कलराज मिश्र वेटरनरी ऑडिटोरियम में सभी उपस्थित विश्वविद्यालय कर्मचारियों एवं अतिथियों को संबोधित करेंगे।

आज पूर्वान्ह में जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल तथा पुलिस अधीक्षक ने अन्य जिले के अधिकारियों के साथ विश्वविद्यालय पहुँच कर विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव व अन्य अधिकारियों से वार्ता की तथा कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण भी किया।

सांगठकलां सीनियर स्कूल की छत से टपकता पानी

राजसमंद, (निसं)। जिला मुख्यालय के समीपवर्ती सांगठकलां ग्राम पंचायत स्थित राउमावि के जर्जर हो चुके भवन की छत से टपकता पानी विद्यार्थियों के अध्ययन में रोढा बना है। इस सरकारी विद्यालय की दीवारें, छत, दरवाजे सहित हर कोना जर्जर हो चुका है।

जिससे कक्षा में विद्यार्थियों को बैठना जान जोखिम में डालने जैसा है

■ बरामदे में एक साथ बैठकर पढ़ाई करने को मजबूर विद्यार्थी

लेकिन ना तो शिक्षा विभाग द्वारा इसकी सुध ली जा रही है और ना ही प्रशासन और जिम्मेदारों द्वारा कोई कार्यवाही की जा रही। जानकारी के अनुसार कई वर्षों पुराने पांच कक्षा कक्ष वाले विद्यालय भवन जर्जर होने के बाद विद्यार्थियों को कक्षा में बैठाने की बजाय बरामदे में बैठाकर अध्ययन करवाया जा रहा है। जब भी लगातार तेज बारिश होती है तो हवा के साथ बारिश का पानी बरामदे में भी आ जाता है। मजबूरन बच्चों की जल्दी छुट्टी करनी पड़ती है। अफसोस की बात है कि क्रमोन्नति के अनुसार इस विद्यालय भवन का विस्तार नहीं किया। हालात ऐसे हैं कि बच्चे अपना यह दर्द किसे सुनाएं? क्योंकि अच्छी शिक्षा देने वाले जिम्मेदार तो स्वयं ही मुखदर्शक बन बैठे हैं। उपसरपंच भैरूलाल जोशी ने बताया कि विद्यालय में कक्षा कक्षों की कमी को देखते हुए हमने भामाशाह से सहयोग लेकर एक कमर बनवाया लेकिन यह भी अब काफी पुराना हो चुका है। वर्तमान में इस कमरे में विद्यालय कार्यालय का कार्य चल रहा है इस कमरे में भी पानी सीलन आ रही है। 11वीं कक्षा में मात्र एक पंखा लगा है कक्षा में अध्ययन करने वाले बच्चों की संख्या अनुसार तीन पंखों की जरूरत है।

क्षतिग्रस्त सांगठकलां विद्यालय की जर्जर छत व टपकता पानी।

राशिफल गुरूवार 28 जुलाई, 2022

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, पुनर्वसु नक्षत्र प्रात: 7:05 तक, वज्र योग सांय 5:56 तक, चतुष्पद करण दिन 10:18 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से संपूर्ण दिन-रात है। अमृत सिद्धि योग और गुरू पुष्य योग प्रात: 7:05 से सूर्योदय तक है। आज गुरू वक्री रात्रि 2:10 से होगा। आज देव पितृकार्य अमावस्या, सरस माधुरी जयन्ती, हरियाली अमावस्या है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:33 तक, चर 10:53 से 12:33 तक, लाभ-अमृत 12:33 से 3:53 तक, शुभ 5:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:53, सूर्यास्त 7:14

मेष

परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण व्यावसायिक संबंध बनेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क

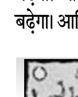

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

सिंह

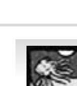

मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक-व्यक्तिगत कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

धनु

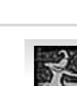

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

कुंभ

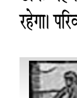

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मीन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।